भारतीय राजनीतिक दलों और भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी की भूमिका

गुलशन कुमार*, प्रो0 दिव्या उपाध्याय जोशी**

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय राजनीतिक दलों और भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका, राजनीति में भागीदारी, वर्तमान स्थिति, समस्याओं और महिलाओं के राजनीतिक भविष्य का अध्ययन किया है। वर्तमान राजनीति में महिलाओं की भागीदारी की वैसी स्थिति नहीं है जैसे बीस साल पहले थी, राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति समय, काल व परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व के इतिहास में एक अपवाद रही है। विश्व आर्थिक मंच की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय राजनीति के क्षेत्र में पंचायती स्तर पर महिलाओं को आरक्षण देने से भारत में लैंगिक समानता के मामले में सुधार हुआ है, ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत राजनीतिक सशक्तिकरण के मामले में 18वें स्थान पर है, जो की अन्य आयामों में अपनी रैंक से कहीं बेहतर है, आर्थिक भागीदारी और अवसर में 149वें, शिक्षा प्राप्ति में 112वें और समग्र सूचकांक में 108वें स्थान पर है। वर्तमान में हमने देखा है, कि उच्च पदों पर महिला प्रतिनिधित्व कम है, विशेष रूप से राज्य स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व काफी पिछड़ा हुआ है, भारत के सभी राज्य सरकार के नेतृत्व की संरचना के आंकड़ो के अनुसार जिसमें सिक्किम, मणिपुर सहित 5 राज्यों में कोई महिला मंत्री ही नहीं है, तथा कोई ऐसा राज्य ही नहीं है, जहाँ महिला मंत्रियों की संख्या एक तिहाई हो जबकि महिला मंत्रियों का उच्चतम अनुपात तमिलनाडु में 13 प्रतिशत है, 68 प्रतिशत राज्यों में राज्य नेतृत्व की भूमिकाओं में 10 प्रतिशत से कम महिला प्रतिनिधित्व है। इसलिए महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता एवं सशक्तिकरण के लिए उनको शिक्षित करना आवश्यक है, जागरूक होकर ही वे अपनी राजनीति में भागीदारी को बढ़ा पाएंगी।

शब्द संकेत : महिला, राजनीति, भागीदारी

प्रस्तावना

राजनीतिक विमर्श में सभी वर्गों की भागीदारी एक सुदृढ़ लोकतंत्र को जन्म देती है, जहाँ भारत की आजादी के 75 वर्ष बाद भी महिलाओं का राजनीति में प्रतिनिधित्व निराशाजनक है। राजनीति में महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य एक ऐसी राजनीतिक प्रक्रिया है, जहाँ महिलाओं के लिए निर्णय निर्माण भागीदारी हेतु नए एवं विविध आयाम खुलते हैं। वर्तमान राजनीति में महिलाओं की भागीदारी की वैसी स्थिति नहीं है जैसे बीस साल पहले थी, राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति समय, काल व परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी न केवल भारत में बल्कि पुरे विश्व के इतिहास में एक अपवाद रही है। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत राजनीतिक सशक्तिकरण के मामले में 18वें स्थान पर है, जो की अन्य आयामों में अपनी रैंक से कहीं बेहतर है, आर्थिक भागीदारी और अवसर में 149वें, शिक्षा प्राप्ति में 112वें और समग्र सूचकांक में 108वें स्थान पर है। वर्तमान में हमने देखा है, कि उच्च पदों पर महिला प्रतिनिधित्व कम है, विशेष रूप से राज्य स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व काफी पिछड़ा हुआ है[1]। इस शोध पत्र का उद्देश्य महिलाओं का राजनीतिक पटल पर महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करना तथा इसकी कमियों को उजागर करना तथा सुझाव प्रस्तुत करना है।

अध्ययन पद्धति

इस शोध पत्र में ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक अध्ययन पद्धति के माध्यम से विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। राजनीतिक दृष्टिकोण से शोध पत्र को लिखने का प्रयास किया गया है।

दक्षिण एशियाई क्षेत्र में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी

अंतराष्ट्रीय संस्था अंतर संसदीय यूनियन के रिपोर्ट 2020 के आँकड़ों से यह पता चलता है कि राजनीति में महिलाओं को अधिकार देने के मामले में भारत विश्व में 143वें स्थान पर आता है। जो विश्व में लोकतंत्र, शांति, सहयोग बढानें की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है। महिलाओं को अधिकार देने के मामलों में भारत, जोर्डन और बेनिन जैसे देशों के साथ खड़ा है। पाकिस्तान इस रिपोर्ट के अनुसार 106वें स्थान पर है, नेपाल 43वें स्थान पर है, बांग्लादेश और भूटान भी महिलाओं के प्रतिनिधित्व संसद में भारत की तुलना से कहीं ज्यादा है।

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल
** प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल

Table No-1 Status of Women in South Asia in 2020					
Rank	**South Asia Country**	**Total seats (Both Houses)**	**Seats held byWomens**	**% of women**	**% of men**
143	India	543	78	12.39	87.61
106	Pakistan	342	69	19.70	80.3
98	Bangladesh	349	73	20.90	79.08
182	Sri Lanka	225	12	12	88
43	Nepal	275	90	35.01	64.99
138	Bhutan	47	7	15.43	84.57

Source-http://archive.ipu.org/wmn-e/world.htm, Jan,2020[2]

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी

भारतीय चुनाव आयोग की प्रकाशित एक रिपोर्ट के आधार पर संसद के कुल सदस्यों में 14.36 प्रतिशत प्रतिनिधित्व महिलाएँ करती हैं। राज्य विधानसभा में महिलाओं की स्थिति और भी खराब है। जहाँ पर उनका नेतृत्व 10 प्रतिशत मात्र है, स्वतंत्रता के 75 साल बीत जाने के बाद भी लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 14.36 % से अधिक नहीं बढ़ सका है। भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों में महिला कार्यकर्ताओं की भरमार है, लेकिन राजनीतिक दलों से उन्हें चुनाव लड़ने के लिए जरुरी टिकट नहीं दिया जाता है, उन्हें हाशिये पर रखा जाता है। हालाँकि भारतीय राजनीति में महिलाओं के इस दयनीय प्रतिनिधित्व के लिए और भी कारण जिम्मेदार हैं, जैसे चली आ रही लिंग संबंधी रूढ़ियाँ राजनीतिक नेटवर्क की कमी, आदि लेकिन एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण जो राजनीति में महिलाओं की सहभागिता में बाधक है वह है, देश के भीतर महिलाओं में राजनीतिक शिक्षा की कमी जो वर्तमान समय में महत्वपूर्ण कारण है[3]। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार 153 देशों में भारत ने शिक्षा प्राप्ति के क्षेत्र में 112वें पायदान पर है। जिससे यह पता चलता है कि राजनीति में महिलाओं की सहभागिता में शिक्षा एक गंभीर साझेदारी अदा करती है, राजनीतिक ज्ञान की कमी के कारण महिलाएँ अपनी बुनियादी और राजनीतिक अधिकारों से बेखबर हैं।

Table 2- Women in Lok- Sabha (Lower chamber of Indian Parliament) 1952- 2019			
Year	**Total No. of Seats**	**No. of Women Members Selected**	**Percent of women**
1952	489	22	4.5
1957	494	27	5.47
1962	494	34	6.88
1967	523	31	5.93
1971	521	22	4.22
1977	544	19	3.49
1980	544	28	5.15
1984	544	44	8.09
1989	529	28	5.29
1991	509	36	7.07
1996	541	40	7.39
1998	545	44	8.07
1999	543	48	8.84
2004	543	45	8.29
2009	543	57	10.87
2014	543	64	11.8
2019	543	78	14.36

Source: Election Commission of India, 2020

चुनाव आयोग के आकड़ों के अनुसार हम यह देखते हैं कि 1952 में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लोकसभा में 4.5 प्रतिशत था, जो आज 2019 में 14.36 प्रतिशत है, जिसमे भारत को 67 वर्षों का समय लगा जो वर्तमान समय में एक महत्वपूर्ण सोचनीय विषय है, महिलाओं की भागीदारी को 50 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए बहुत सारे बदलाव करने की आवश्यकता है[4]।

भारतीय राजनीति में लिंग भेदभाव के कारण

1. सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के बावजूद भी वर्तमान भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता जटिल रूप से व्याप्त है। इसके कारण महिलाओं को आज भी एक जिम्मेदारी समझा जाता है, महिलाओं को सामाजिक और पारिवारिक रूढ़ियों के कारण विकास के कम अवसर मिलते है, जिससे उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पता है, सबरीमाला जैसे मुद्दों पर सामाजिक मतभेद पितृसत्तात्मक मानसिकता को प्रतिबिंबित करता है।

2. भारत में आज भी व्यवहारिक स्तर (वैधानिक स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार संपत्ति पर महिलाओं का समान अधिकार है) पर पारिवारिक संपत्ति पर महिलाओं का अधिकार प्रचलन में नहीं है। इसलिए उनके साथ विभेदकारी व्यवहार किया जाता है।
3. राजनीतिक स्तर पर पंचायती राज व्यवस्था को छोड़कर उच्च वैधानिक संस्थानों में महिलाओं के लिए किसी भी प्रकार के आरक्षण की व्यवस्था नहीं है।
4. वर्ष 2017–18 के नवीनतम अधिकारिक "आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण (Periodic Labor Force Survey) के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला श्रम शक्ति और कार्य सहभागिता दर कम है ऐसी परिस्थिति में आर्थिक मापदण्ड पर महिलाओं की आत्मनिर्भरता पुरुषों पर बनी है।
5. शैक्षिक कारक जैसे मानकों पर महिलाओं की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा कमजोर है, हालाँकि लड़कियों के शैक्षिक नामांकन में पिछले दो दशकों में वृद्धि हुई लेकिन अभी भी उच्च शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का नामांकन पुरुषों की तुलना में कम है[5]।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हेतु आवश्यक उपाय

महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ने से राजनीति की प्रकृति में बदलाव होने की उम्मीद है। राजनीति विविध आयामों मसलन राजनीति, अर्थ, शिक्षा, राज्य की सुरक्षा तथा स्वास्थ्य आदि के क्षेत्रों के महत्वपूर्ण फैसले लेती है और यदि इसमें आधी आबादी की सोच अथवा हित शामिल न हो तो यह असमानता की पहचान है इसलिए जरुरी है कि राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़े इसके लिए निम्न उपाय किये जाने चाहिए–

1– महिलाओं के लिए पंचायत में आरक्षण के अपार सफलता को ध्यान में रखते हुए संसद में महिलाओं के लिए प्रस्तावित आरक्षण विधेयक को पारित किया जाना चाहिए यह कदम राजनीति में महिलाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगा।

2– राजनीति दलों पर अधिक महिलाओं को टिकट दिया जाना चाहिए तथा दल में भी महिलाओं को आरक्षण मिलना चाहिए ताकि महिलाओं की पर्याप्त संख्या सुनिश्चित की जा सके। विश्व के कई देशों जैसे स्वीडन, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, नोर्वे और फ्रांस आदि जगह ऐसे प्रावधान है और इसका पर्याप्त असर देखा गया है।

3– महिलाओं के राजनीति में जाने को लेकर जो सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिबंध व रूढ़िवादिता है इसे दूर किया जाना चाहिए। यह राजनीति में महिलाओं के प्रतिभाग को हतोत्साहित करता है। राजनीति में महिलाओं का जाना तथा वैसे माहौल में जहाँ पुरुषों का वर्चस्व है, वहाँ महिलाओं का पितृसत्ता को चुनौती देना समाज को स्वीकार्य नहीं है। इसलिए जरुरी है कि ऐसी सोच से दूर शिक्षित, जागरूक समाज की ओर आगे बढ़ा जाए जहाँ महिलाएँ राजनीति जैसे पुरुष वर्चस्ववादी क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा व क्षमता प्रदर्शित कर सके।

4– महिला के राजनीति में अधिकतम भागीदारी से उनमे आत्मविश्वास व नेतृत्व क्षमता का विकास होगा। महिला सशक्तिकरण व राजनीतिक भागीदारी को बल मिलेगा। WEF (वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम) ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत राजनीतिक सशक्तिकरण के मामले में 18वें स्थान पर है जो बेहतर है लेकिन भारतीय राजनीति में आज भी महिलाओं की सक्रीय भागीदारी बहुत कम है, आँकड़ों के अनुसार केवल 14 प्रतिशत महिलाएँ ही संसद पहुँच पाती है जिसमें बढ़ोतरी करना अनिवार्य है[6]।

निष्कर्ष

हमारे समाज में पुरुषों और महिलाओं की विभिन्न भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को देखते हुए राजनीति को पुरुषों का क्षेत्र माना जाता है, किन्तु राजनीति में महिलाओं का सक्रिय प्रतिभाग जरुरी है जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिले, वर्तमान समय में जरुरत है, महिला एवं पुरुष बराबर हों और उनको समान अवसर दिये जाने चाहिए। यह भी सत्य है कि सरकार और समाज में महिलाओं की राजनीति में समान भागीदारी हेतु कदम उठाये है परन्तु यह पर्याप्त नहीं है, आज महिलाएं राजनीति के प्रत्येक आयाम पर प्रतिभाग करने के लिए काबिल और सक्षम हैं इसलिए राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं के लिए उन्नति के दरवाजे खुलने चाहिए। अंततः यह कहा जा सकता है कि भारत में समानता पर आधारित समरतामूलक समाज की स्थापना तभी होगी जब राष्ट्र का प्रत्येक वर्ग सुद्रढ़ व सशक्त होगा। महिला सशक्तिकरण, महिला समानता, महिला सुरक्षा, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय की अवधारणा तभी सार्थक हो सकेंगी जब महिलाओं को राजनीतिक रूप से सबल बनाया जायेगा तभी पुरुष शासित सोच से परिपूर्ण समाज में समग्र विकास होगा।

संदर्भ सूची

1. Gender gap report 2020 - www3.weforum.org/docs/WEF_GGGR_2020.pdf data retrieved from - www.weforum.org
2. Inter-Parliamentary Union report 2020, Data retrieved from-http://archive.ipu.org/wmn-e/world.htm (Jan, 2020) 3- Election Commission of India, 2020, Data retrieved from- https://eci.gov.in/statistical-report/statistical-reports/
3. Kumar, Pankaj, (2021). Gender issuses in indian politics, Data retrieved from- https://www.researchgate.net/publication/350372514_Gender_issues_in_Indian_Politics, page no-4-7
4. Kumar, D. (2017). Participation of women in politics: Worldwide experience. IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS), 22(12), page no 77-88
5. पाण्डेय, कविता (2021)राजनीति में महिलाओं की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण International journal of humanities and social journal of humanities and social science research. www.socialsciencejournal.in page no.1-3
6. आर्य, अशोक (2015).भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका Journal of advance and scholarly research in allied education (JASREA) (Vol. 10. Issue;19), page no - 5